KKM COLLEGE, PAKUR

Department of Sociology

B.A.(Honors)-Sem.06-DSE-III--Hons

Paper Name: Conflict and Peace Building

(संघर्ष एवं शांति निर्माण)

Prof. AVINASH TIWARI

Assistant Professor,
Department of Sociology,
KKM College, Pakur

Email ID-avinashtiwari557@gmail.com

PAPER NAME

Conflict and Peace Building
(संघर्ष एवं शांति निर्माण)

- **संघर्ष (Conflict):--**

Conflict शब्द लेटिन भाषा के Con+Fligo से मिलकर बना है Con का अर्थ है together तथा Fligo का अर्थ है-To Strike. अत: संघर्ष का अर्थ है-लड़ना, प्रभुत्व के लिए संघर्ष करना, विरोध करना, किसी पर काबू पाना आदि। आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार-दो वर्गों में या समूहों के बीच सशस्त्र प्रतिरोध, लड़ाई या युद्ध संघर्ष है। विपरीत सिद्धान्तों, कथनों, तर्कों आदि सेविरोध भी संघर्ष है तथा विचारों, मतों और पसन्द के बीच असामंजस्यपूर्ण व्यवहार भी संघर्ष है।गिलीन एवं गिलीन के अनुसार-संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अथवा समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विरोधी के प्रति प्रत्यक्ष हिंसा या हिंसा की धमकी का प्रयोग करते ह®। अर्थात् किसी साध्य प्राप्ति हेतु किये जाने वाले संघर्ष की प्रकृति में ही विरोधी के प्रति घृणा और हिंसा की भावना विद्यमान होती है। प्रो. ग्रीन के अनुसार-''संघर्ष जानबूझकर किया गया वह प्रयत्न है, जो किसी की इच्छा का विरोध करने, उसके आड़े आने अथवा उसको दबाने के लिए किया जाता है।'

संघर्ष या द्वन्द्व (Conflict) से तात्पर्य दो या अधिक समूहों के बीच मतभेद, प्रतिरोध, विरोध आदि से है। एक ही समूह के अन्दर भी द्वन्द्व हो सकता है। इस स्थिति में अन्तःसमूह द्वन्द्व (intragroup conflict) कहते हैं। संघर्ष या द्वंद दो परस्पर विरोधी कार्य- पद्धतियों की संक्रिया है। यह प्रेरणा, आवश्यकता, मूल्य प्रवृति और आवेग हो सकते है।

- **<u>संघर्ष का स्वरूप:</u>**- 1. विध्वंसात्मक बनाम उत्पादक संघर्ष- 2. दृष्टिकोण, व्यवहार और संघर्ष- 3. सम्बन्ध न होने की अपेक्षा संघर्षपूर्ण सम्बन्ध अच्छे है- संघर्ष के प्रकार 1. वैयक्तिक संघर्ष - 2. प्रजातीय संघर्ष - 3. वर्ग संघर्ष - 4. जातीय संघर्ष- 5. राजनैतिक संघर्ष - 6. अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष

  संघर्ष मानव सम्बन्धों में सतत रहने वाली एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति व्यक्ति के बीच सहयोग नहीं होता अथवा जब वे एक दूसरे के प्रति तटस्थ भी नहीं होते, तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो ही जाती है। संघर्ष को समाज में अस्वाभाविक भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि जब सीमित लक्ष्यों को अनेक व्यक्ति प्राप्त करना चाहें तो संघर्ष स्वाभाविक ही है

- **<u>वर्ग संघर्ष (Class struggle)</u>:--**

  मार्क्सवादी विचारधारा का प्रमुख तत्व है। मार्क्सवाद के शिल्पकार कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजेल्स ने लिखा है, " अब तक विद्यमान सभी समाजों का लिखित इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत ऐतिहासिक भौतिकवाद की ही उपसिधि है ओर साइर्थ ही यह अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत के अनुकूल है। मार्क्स ने आर्थिक नियतिवाद की सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति इस बात में देखी है कि समाज मे सदैव ही विरोधी आर्थिक वर्गों का अस्तित्व रहा है। एक वर्ग वह है जिसके पास उत्पादन के साधनों का स्वामित्व है ओर दूसरा वह जो केवल शारिरिक श्रम करता है। पहला वर्ग सदैव ही दूसरे वर्ग का शोषण करता है। मार्क्स के अनुसार समाज के शोषक ओर शोषित - ये दो वर्ग सदा ही आपस मे संघर्षरत रहे हैं और इनमें समझोता कभी संभव नहीं है। .

- **संघर्ष सिद्धांत क्या है?**

संघर्ष सिद्धांत बताता है कि तनाव और संघर्ष पैदा होती है जब संसाधन, हैसियत और ताकत असमान समाज में और इन विरोधों को सामाजिक परिवर्तन के लिए इंजन बन समूहों के बीच वितरित कर रहे हैं। इस संदर्भ में, शक्ति भौतिक संसाधनों के नियंत्रण के रूप में समझा जा सकता है और धन, राजनीति और संस्थानों है कि समाज को बनाने के नियंत्रण संचित, और दूसरों के लिए एक की सामाजिक स्थिति रिश्तेदार (वर्ग द्वारा लेकिन जाति, लिंग, कामुकता, द्वारा न सिर्फ निर्धारित संस्कृति , और धर्म, अन्य बातों के अलावा)।

कार्ल मार्क्स

"एक घर बड़े या छोटे हो सकता है, जब तक कि पड़ोसी घरों वैसे ही छोटे हैं, यह एक निवास के लिए सभी सामाजिक आवश्यकता को संतुष्ट करता है लेकिन वहाँ जाने महल छोटे से घर के बगल में उत्पन्न होती हैं, और छोटे से घर एक झोपड़ी के लिए सिकुड़ जाता।।"

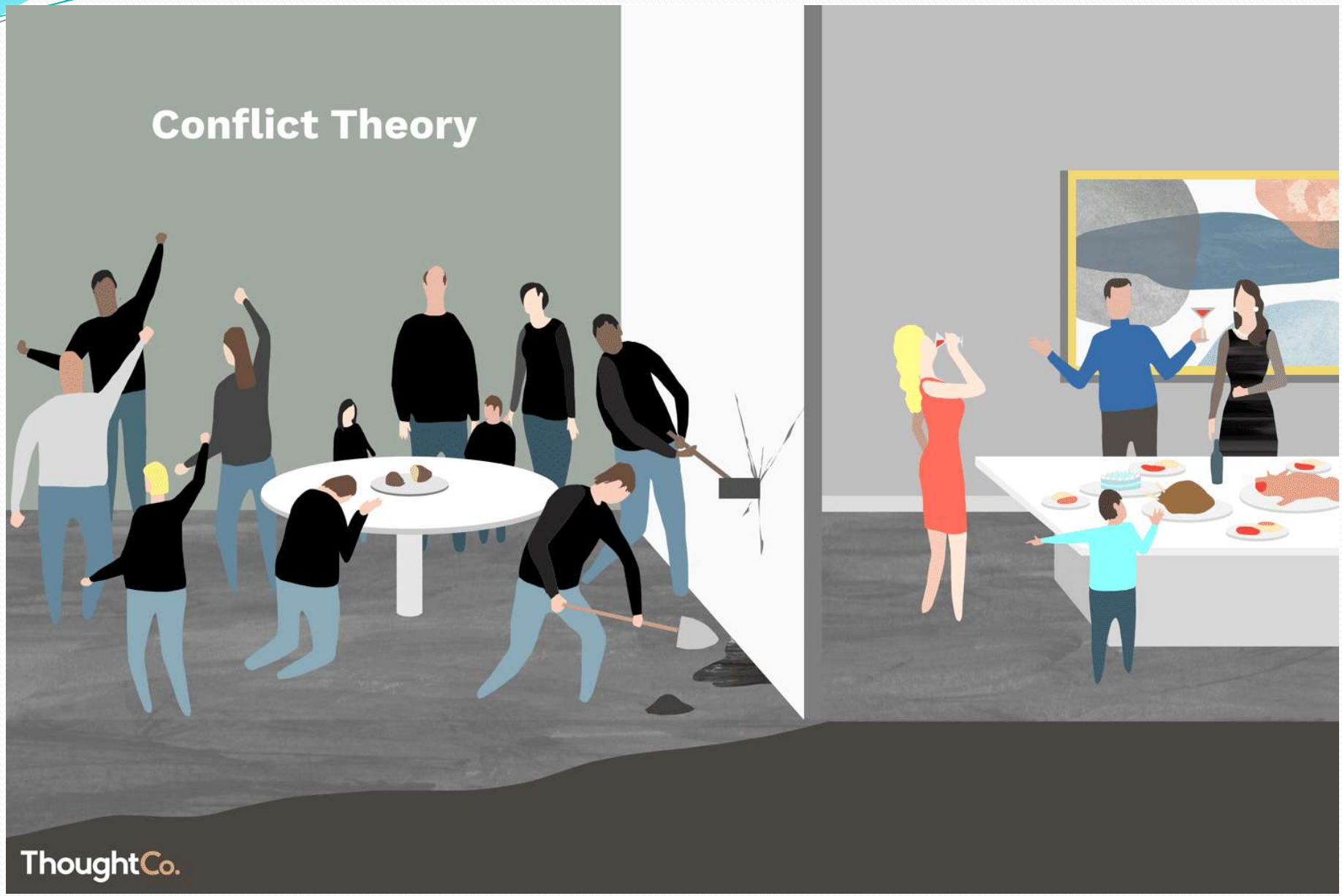
Conflict Theory
ThoughtCo.

- **मार्क्स के संघर्ष सिद्धांत**

संघर्ष सिदधांत उत्पन्न कार्ल मार्क्स के काम में , जो कारणों और पूंजीपति वर्ग (उत्पादन के साधन और पूंजीपतियों के मालिक) और सर्वहारा वर्ग (श्रमिक वर्ग और गरीब) के बीच वर्ग संघर्ष के परिणामों पर जोर दिया। के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ पर केंद्रित यूरोप में पूंजीवाद के उदय , मार्क्स ने अनुमान लगाया है कि इस प्रणाली, एक शक्तिशाली अल्पसंख्यक वर्ग (बुर्जुआ) के अस्तित्व पर आधारित है और एक उत्पीड़ित बहुमत वर्ग (सर्वहारा वर्ग), वर्ग संघर्ष बनाया क्योंकि दो के हितों अंतर पर थे, और ससाधनों अन्यायपूर्ण उन के बीच वितरित किए गए। और मूल्यों, उम्मीदें, और शर्तों की स्वीकृति के रूप में पूंजीपति वर्ग द्वारा निर्धारित - इस प्रणाली के भीतर एक असमान सामाजिक व्यवस्था वैचारिक बलात्कार जो आम सहमति बनाई माध्यम से बनाए रखा गया था। मार्क्स ने अनुमान लगाया है कि आम सहमति के उत्पादन का काम समाज है, जो सामाजिक संस्थाओं, राजनीतिक संरचनाओं, और संस्कृति से बना है की "अधिरचना" में किया गया था, और क्या यह आम सहमति का उत्पादन के लिए "आधार" उत्पादन की आर्थिक संबंधों था।

मार्क्स ने समझाया की के रूप में सामाजिक-आर्थिक स्थिति सर्वहारा वर्ग के लिए खराब हो गई, वे एक वर्ग चेतना है कि पूंजीपति वर्ग के अमीर पूंजीवादी वर्ग के हाथों में उनके शोषण का पता चला विकसित होगा, और फिर वे विद्रोह होगा, संघर्ष चिकनी में परिवर्तन की मांग की। मार्क्स के मुताबिक, अगर संघर्ष को खुश करने के लिए किए गए परिवर्तनों एक पूंजीवादी व्यवस्था को बनाए रखा है, तो संघर्ष के चक्र को दोहराने होगा। हालांकि, किए गए परिवर्तनों को एक नई प्रणाली बनाया है, तो समाजवाद की तरह है, तो शांति और स्थिरता हासिल की जाएगी।

- **संघर्ष सिद्धांत का विकास**

कई सामाजिक सिद्धांतों यह सिलेंडर, यह बड़े होते हैं, और पिछले कुछ वर्षों में यह परिष्कृत करने के लिए मार्क्स के संघर्ष सिद्धांत पर बनाया गया है। का कारण बताते हुए क्रांति के मार्क्स के सिद्धांत अपने जीवनकाल में प्रकट नहीं किया था, इतालवी विद्वान और कार्यकर्ता एंटोनियो ग्राम्स्की ने तर्क दिया कि विचारधारा की शक्ति से अधिक मजबूत मार्क्स महसूस किया था और अधिक काम की जरूरत सांस्कृतिक आधिपत्य पर काबू पाने के लिए, या करने के लिए किया जा सकता है कि सामान्य ज्ञान के माध्यम से शासन । मैक्स होर्खाइमर और थियोडोर एडोर्नो, महत्वपूर्ण सिद्धांतकारों जो फ्रैंकफर्ट स्कूल का हिस्सा थे , अपने काम ध्यान केंद्रित किया कि जन संस्कृति की वृद्धि पर - बड़े पैमाने पर उत्पादित कला, संगीत, और मीडिया - सांस्कृतिक आधिपत्य के रेखरखाव के लिए योगदान दिया। अभी हाल ही में सी.राइट मिल्स संघर्ष सिद्धांत पर आकर्षित किया के उदय का वर्णन करने केएक छोटे से "सत्ता कुलीन" सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक हस्तियों से बना है जो बीसवीं सदी के मध्य से अमेरिका ने फैसला सुनाया है।

कई अन्य लोगों संघर्ष सिद्धांत पर तैयार की है सहित सामाजिक विज्ञान के भीतर सिद्धांत के अन्य प्रकार, विकसित करने के लिए नारीवादी सिद्धांत , महत्वपूर्ण दौड़ सिद्धांत, उत्तर आधुनिक और उत्तर औपनिवेशिक सिद्धांत, समलैंगिक सिद्धांत, पोस्ट-स्ट्रक्चरल सिद्धांत, और भूमंडलीकरण और दुनिया प्रणालियों के सिद्धांतों । तो, जबकि शुरू में संघर्ष सिद्धांत वर्ग संघर्ष विशेष रूप से बताया गया है, यह अपने आप में पिछले कुछ वर्षों में अध्ययन करने के लिए संघर्ष की कैसे अन्य प्रकार के उधार है, जाति, लिंग, कामुकता, धर्म, संस्कृति, और राष्ट्रीयता, दूसरों के बीच पर आधारित लोगों की तरह, एक हिस्सा हैं समकालीन सामाजिक संरचना, और कैसे की वे हमारे जीवन को प्रभावित।

- **कोजर का संघर्ष का प्रकार्यवाद का सिद्धांत**

कोजर का सिद्धान्तः संघर्ष का प्रकार्यवाद
(Theory of Coser: Conflict Functionalism)

विभिन्न विद्वानों द्वारा सामाजिक संघर्ष से सम्बन्ध में जितने भी सिद्धान्तों का प्रतिपादित किया गया है उनमें **प्रो॰ लीविस ए॰ कोजर** (Lewis A. Coser) का सिद्धान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आपने अपने सिद्धान्त को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Functions of Social Conflict' (1954) में प्रस्तुत किया है। आपके सिद्धान्त को 'संघर्ष का प्रकार्यवाद' (Conflict Functionalism) कहा जाता है क्योंकि आपने सामाजिक संघर्ष के प्रकार्यात्मक पक्ष को उजागर करने का प्रयास किया है और यह दर्शाया है कि लोगों की यह आम धारणा गलत है कि सामाजिक संघर्ष के केवल विघटनात्मक परिणाम ही उत्पन्न होते हैं। वास्तव में सामाजिक संघर्ष का संगठनात्मक प्रकार्य कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। श्री कोजर का सिद्धान्त सामाजिक संघर्ष के इन्हीं प्रकार्य कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। श्री कोजर का सिद्धान्त सामाजिक संघर्ष के इन्हीं संगठनात्मक प्रकार्यों पर टिका हुआ है।

श्री कोजर के अनुसार यह सच है कि सामाजिक संघर्ष से दो प्रकार के सम्भावित परिणाम उत्पन्न होते हैं—एक तो संगठनात्मक परिणाम और दूसरा विघटनात्मक परिणाम। सामाजिक

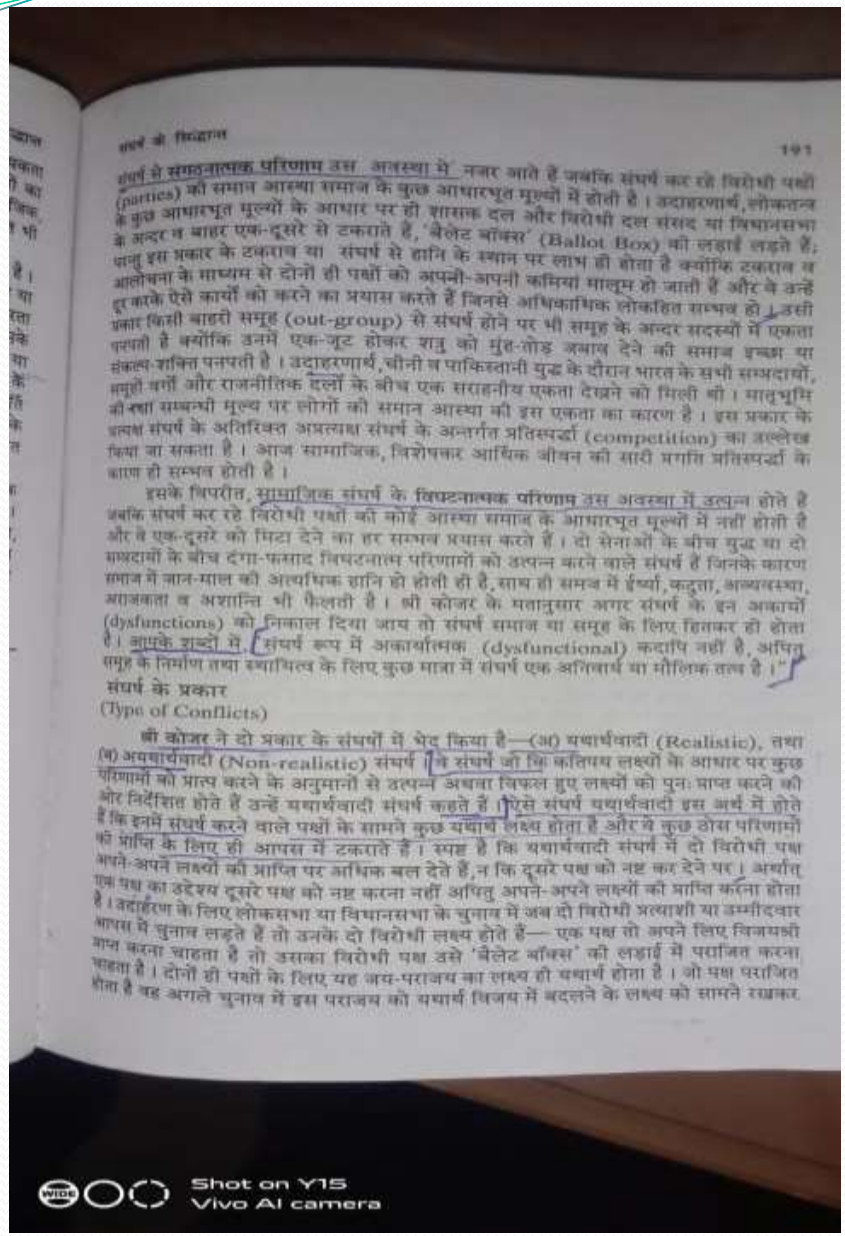

संघर्ष से संगठनात्मक परिणाम उस अवस्था में नजर आते हैं जबकि संघर्ष कर रहे विरोधी पक्षों (parties) की समान आस्था समाज के कुछ आधारभूत मूल्यों में होती है। उदाहरणार्थ, लोकतन्त्र के कुछ आधारभूत मूल्यों के आधार पर ही शासक दल और विरोधी दल संसद या विधानसभा के अन्दर व बाहर एक-दूसरे से टकराते हैं, 'बैलेट बॉक्स' (Ballot Box) की लड़ाई लड़ते हैं, परन्तु इस प्रकार के टकराव या संघर्ष से हानि के स्थान पर लाभ ही होता है क्योंकि टकराव व आलोचना के माध्यम से दोनों ही पक्षों को अपनी-अपनी कमियाँ मालूम हो जाती हैं और वे उन्हें दूर करके ऐसे कार्यों को करने का प्रयास करते हैं जिनसे अधिकाधिक लोकहित सम्भव हो। इसी प्रकार किसी बाहरी समूह (out-group) से संघर्ष होने पर भी समूह के अन्दर सदस्यों में एकता पनपती है क्योंकि उनमें एक-जुट होकर शत्रु को मुंह-तोड़ जवाब देने की समान इच्छा या संकल्प-शक्ति पनपती है। उदाहरणार्थ, चीनी व पाकिस्तानी युद्ध के दौरान भारत के सभी सम्प्रदायों, समूहों, वर्गों और राजनीतिक दलों के बीच एक सराहनीय एकता देखने को मिली थी। मातृभूमि की रक्षा सम्बन्धी मूल्य पर लोगों की समान आस्था ही इस एकता का कारण है। इस प्रकार के प्रत्यक्ष संघर्ष के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष संघर्ष के अन्तर्गत प्रतिस्पर्द्धा (competition) का उल्लेख किया जा सकता है। आज सामाजिक, विशेषकर आर्थिक जीवन की सारी प्रगति प्रतिस्पर्द्धा के कारण ही सम्भव होती है।

इसके विपरीत, सामाजिक संघर्ष के विघटनात्मक परिणाम उस अवस्था में उत्पन्न होते हैं जबकि संघर्ष कर रहे विरोधी पक्षों की कोई आस्था समाज के आधारभूत मूल्यों में नहीं होती है और वे एक-दूसरे को मिटा देने का हर सम्भव प्रयास करते हैं। दो सेनाओं के बीच युद्ध या दो सम्प्रदायों के बीच दंगा-फसाद विघटनात्मक परिणामों को उत्पन्न करने वाले संघर्ष हैं जिनके कारण समाज में जान-माल की अत्यधिक हानि तो होती ही है, साथ ही समाज में ईर्ष्या, कटुता, अव्यवस्था, अराजकता व अशान्ति भी फैलती है। श्री कोजर के मतानुसार अगर संघर्ष के इन अकार्यों (dysfunctions) को निकाल दिया जाय तो संघर्ष समाज या समूह के लिए हितकर ही होता है। आपके शब्दों में, "संघर्ष रूप में अकार्यात्मक (dysfunctional) कदापि नहीं है, अपितु समूह के निर्माण तथा स्थायित्व के लिए कुछ मात्रा में संघर्ष एक अनिवार्य या मौलिक तत्व है।"

संघर्ष के प्रकार
(Type of Conflicts)

श्री कोजर ने दो प्रकार के संघर्षों में भेद किया है—(अ) यथार्थवादी (Realistic), तथा (ब) अयथार्थवादी (Non-realistic) संघर्ष। वे संघर्ष जो कि कतिपय लक्ष्यों के आधार पर कुछ परिणामों को प्राप्त करने के अनुमानों से उत्पन्न अथवा विफल हुए लक्ष्यों को पुनः प्राप्त करने की ओर निर्देशित होते हैं उन्हें यथार्थवादी संघर्ष कहते हैं। ऐसे संघर्ष यथार्थवादी इस अर्थ में होते हैं कि इनमें संघर्ष करने वाले पक्षों के सामने कुछ यथार्थ लक्ष्य होता है और वे कुछ ठोस परिणामों की प्राप्ति के लिए ही आपस में टकराते हैं। स्पष्ट है कि यथार्थवादी संघर्ष में दो विरोधी पक्ष अपने-अपने लक्ष्यों की प्राप्ति पर अधिक बल देते हैं, न कि दूसरे पक्ष को नष्ट कर देने पर। अर्थात् एक पक्ष का उद्देश्य दूसरे पक्ष को नष्ट करना नहीं अपितु अपने-अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करना होता है। उदाहरण के लिए लोकसभा या विधानसभा के चुनाव में जब दो विरोधी प्रत्याशी या उम्मीदवार आपस में चुनाव लड़ते हैं तो उनके दो विरोधी लक्ष्य होते हैं— एक पक्ष तो अपने लिए विजयश्री प्राप्त करना चाहता है तो उसका विरोधी पक्ष उसे 'बैलेट बॉक्स' की लड़ाई में पराजित करना चाहता है। दोनों ही पक्षों के लिए यह जय-पराजय का लक्ष्य ही यथार्थ होता है। जो पक्ष पराजित होता है वह अगले चुनाव में इस पराजय को यथार्थ विजय में बदलने के लक्ष्य को सामने रखकर

Shot on Y15
Vivo AI camera

कोजर (प्रकार्यात्मक सिद्धान्त)

परिणाम

संघर्ष के प्रकार

यथार्थवादी संघर्ष

अयथार्थवादी संघर्ष

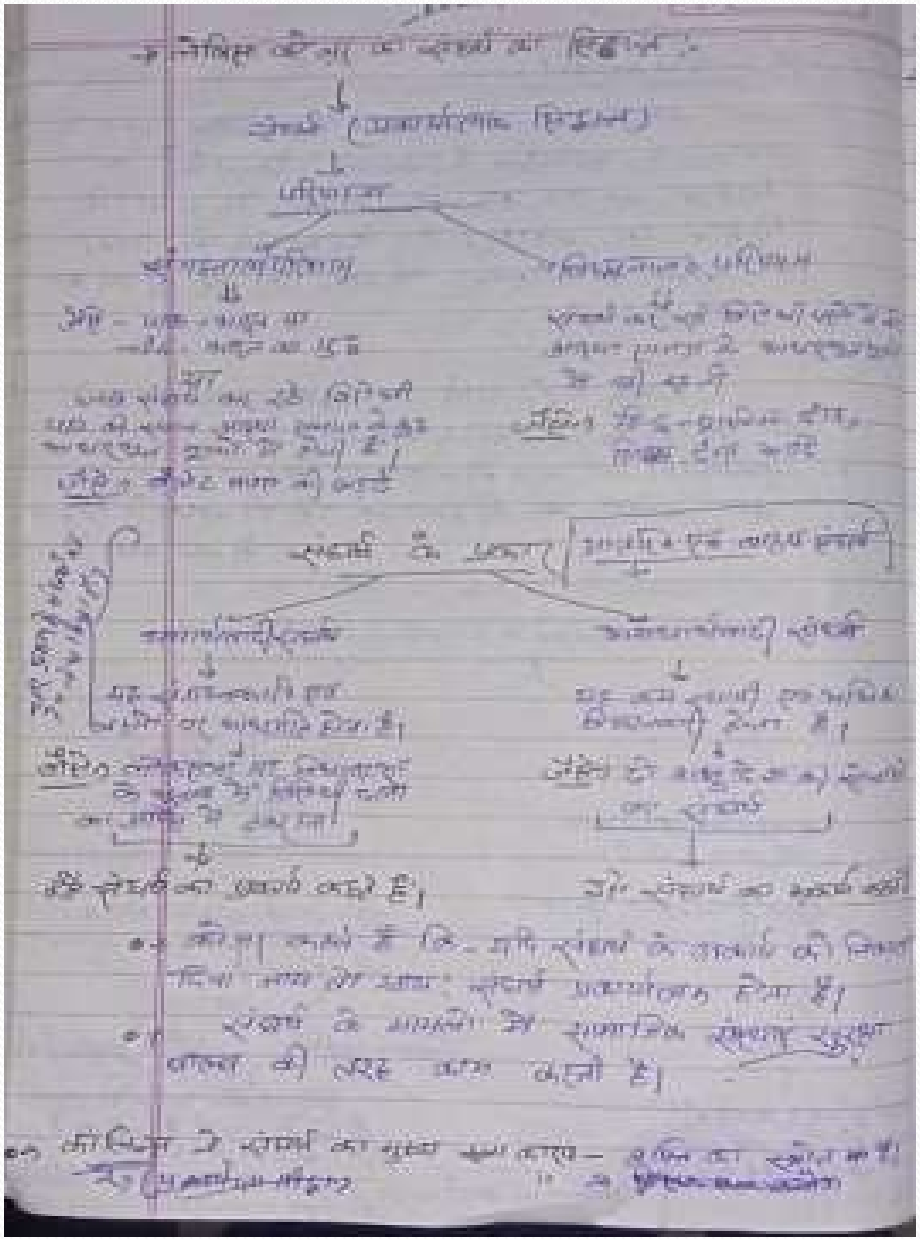

- **<u>संघर्ष प्रबंधन</u>:--**

पूंजीवादी औद्योगिक अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता औद्योगिक संघर्ष है। इसका तात्पर्य मालिकों और श्रमिकों के मध्य होने वाले मतभेदों से है जिनका परिणाम हड़ताल, तालाबंदी, काम की धीमी गति, घेराव तथा इस प्रकार की अन्य समस्याओं के रूप में सामने आता है। अत: औद्योगिक संघर्ष वह मतभेद है जो रोजगार देने या न देने अथवा रोजगार की शर्तों या श्रम की दशाओं के सम्बन्ध में विभिन्न मालिकानों के मध्य या विभिन्न श्रमिकों के मध्य या श्रमिकों और मालिकानों के मध्य होता है।

दूसरे शब्दों में श्रमिकों व नियोक्ताओं के मध्य श्रमिकों को रोजगार या उनकी बेरोजगारी की दशाओं से संबंधित असहमति को निर्देशित करता है। अधिकांश रूप से उत्पन्न होने वाले संघर्ष, मंहगाई भत्ता, बोनस, श्रमिकों की पदच्युति अथवा सेवामुक्ति, अवकाश एवं छुट्टियों, सेवानिवृत्ति लाभों और मकान किराया एवं अन्य भत्तों से संबद्ध हो सकते हैं।

- **संघर्ष प्रबंधन की विशेषताएँ**

1. औद्योगिक संघर्ष में विभिन्न पक्षकारों के बीच होते हैं : जैसे – मालिकों के मध्य मालिकों एवं श्रमिकों के मध्य, श्रमिकों एवं श्रमिकों के मध्य
2. इन विभिन्न पक्षकारों के मध्य उत्पन्न संघर्ष तब औद्योगिक संघर्ष कहलाता है।
   जबकि संघर्ष का संबंध निम्न में से किसी विषय में होता है। : (अ) किसी कर्मचारी की नियुक्ति या सेवामुक्ति से सम्बन्धित हो, (ब) किसी कर्मचारी की सेवा शर्तों से सम्बन्धित हों, (स) किसी कर्मचारी की कर्य दशाओं से सम्बिन्ध्ात हो।
3. औद्योगिक संघर्ष को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं होती।
4. जिन पक्षकारों के द्वारा संघर्ष की दशायें पैदा की जाती है, उनका संघर्ष में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हित जुड़ा होता है।
5. संघर्ष की पक्षकारों के मध्य वास्तविक रूप से होना आवश्यक होता है।
6. औद्योगिक संघर्ष के अंतर्गत संघर्ष एवं उनके पक्षकार स्पष्ट होने आवश्यक हैं।
7. औद्योगिक संघर्ष को भूतपूर्व श्रमिक द्वारा भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
8. औद्योगिक संघर्ष उद्योग में अव्यवस्था के कारण उत्पन्न होते हैं।

- **न्याय की परिभाषा**

न्याय की अवधारणा एक बड़े क्षेत्र की अवधारणा है। यह एक ऐसी अवधारणा है जिसके अर्थो के संबंधी विद्वानो में सहमति नहीं हैं। न्याय की अवधारणा वास्तव में एक नैतिक अवधारणा है। नैतिकता या नैतिक सिद्धांत हमेशा के लिए स्थिर या समान नहीं हो सकते। कुछ लोग जो नैतिकता देखते हैं वे कुछ अन्य लोगों के लिए अनैतिक भी हो सकते हैं। न्याय की अवधारणा व्यक्ति की उचित या तर्कशील भावना पर आधारित है। जो कुछ व्यक्तियों की अंतरात्मा को भाता है, वह न्याय पूर्ण है और जो उसकी अंतरात्मा को प्रसन्न नहीं करता है, वह उसकी दृष्टि में अन्यायपूर्ण है। न्याय की अवधारणा व्यक्तिगत रूप से और समाज से समाजिक रूप से संबंधित है। न्याय की अवधारणा के कई पहलू हैं और प्रत्येक पहलू की अपनी ही विशेषताएं हैं।

जे एस मिल (J.S. Mill) के अनुसार, "न्याय उन विशेष नैतिक मूल्यों का नाम है जो स्पष्ट रूप से मानव कल्याण से संबंधित हैं। ऐसी मूलय जीवन के दिशानिर्देश के अन्य सभी नियमों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मेरियम (Merriam) के अनुसार, 'न्याय मान्यताओं और विधियों की एक ही प्रणाली, जिसके माध्यम से व्यक्ति को वह कुछ दिया जाता है जिसमें उचित होने संबंधी सहमति होती है।

साल्मंड (Salmond) के विचार के अनुसार, 'न्याय का अर्थ है हर व्यक्ति को हिस्सा देना।

आर सी टॅकर (R.C. Tucker) के अनुसार, "दो परस्पर विरोधी पक्ष या सिद्धांतों के बीच उचित संतुलन बनाना न्याय का सारांश है।

- **सामाजिक न्याय**

एक विचार के रूप में **सामाजिक न्याय** (social justice) की बुनियाद सभी मनुष्यों को समान मानने के आग्रह पर आधारित है। इसके मुताबिक किसी के साथ सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पूर्वग्रहों के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। हर किसी के पास इतने न्यूनतम संसाधन होने चाहिए कि वे 'उत्तम जीवन' की अपनी संकल्पना को धरती पर उतार पाएँ। विकसित हों या विकासशील, दोनों ही तरह के देशों में राजनीतिक सिद्धांत के दायरे में सामाजिक न्याय की इस अवधारणा और उससे जुड़ी अभिव्यक्तियों का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसका अर्थ हमेशा सुस्पष्ट ही होता है। सिद्धांतकारों ने इस प्रत्यय का अपने-अपने तरीके से इस्तेमाल किया है। व्यावहारिक राजनीति के क्षेत्र में भी, भारत जैसे देश में सामाजिक न्याय का नारा वंचित समूहों की राजनीतिक गोलबंदी का एक प्रमुख आधार रहा है। उदारतावादी मानकीय राजनीतिक सिद्धांत में उदारतावादी-समतावाद से आगे बढ़ते हुए सामाजिक न्याय के सिद्धांतीकरण में कई आयाम जुड़ते गये हैं। मसलन, अल्पसंख्यक अधिकार, बहुसंस्कृतिवाद, मूल निवासियों के अधिकार आदि। इसी तरह, नारीवाद के दायरे में स्त्रियों के अधिकारों को ले कर भी विभिन्न स्तरों पर सिद्धांतीकरण हुआ है और स्त्री-सशक्तीकरण के मुद्दों को उनके सामाजिक न्याय से जोड़ कर देखा जाने लगा है।

गांधीवादी विचारधारा क्या है?

- गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई थी।
- गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।
- यह दर्शन कई स्तरों आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है। इसके अनुसार-
- आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में हैं।
- मानव स्वभाव को मूल रूप से सद्गुणी है।
- सभी व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार करने के लिये सक्षम हैं।
- गांधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देती है।
- गांधीवादी दर्शन एक दोधारी तलवार है जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है।
- गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया।
- टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था।
- गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा।
- इन विचारों को बाद में "गांधीवादियों" द्वारा विकसित किया गया है, विशेष रूप से, भारत में विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण तथा भारत के बाहर मार्टिन लूथर किंग जूनियर और अन्य लोगों द्वारा।

प्रमुख गांधीवादी विचारधारा

- **सत्य और अहिंसा:** गांधीवादी विचारधारा के ये 2 आधारभूत सिद्धांत हैं।
- गांधी जी का मानना था कि जहाँ सत्य है, वहाँ ईश्वर है तथा नैतिकता - (नैतिक कानून और कोड) इसका आधार है।
- **अहिंसा** का अर्थ होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। गांधी जी के अनुसार अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को कभी भी मानसिक व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुँचाता है।
- **सत्याग्रह:** इसका अर्थ है सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ शुद्धतम आत्मबल का प्रयोग करना।
- यह व्यक्तिगत पीड़ा सहन कर अधिकारों को सुरक्षित करने और दूसरों को चोट न पहुँचाने की एक विधि है।
- सत्याग्रह की उत्पत्ति उपनिषद, बुद्ध-महावीर की शिक्षा, टॉलस्टॉय और रस्किन सहित कई अन्य महान दर्शनों में मिल सकती है।
- **सर्वोदय-** सर्वोदय शब्द का अर्थ है 'यूनिवर्सल उत्थान' या 'सभी की प्रगति'। यह शब्द पहली बार गांधी जी ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर जॉन रस्किन की पुस्तक "अंटू दिस लास्ट" पर पढ़ा था।

स्वराज- हालाँकि स्वराज शब्द का अर्थ स्व-शासन है, लेकिन गांधी जी ने इसे एक ऐसी अभिन्न क्रांति की संज्ञा दी जो कि जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करती है।

गांधी जी के लिये स्वराज का मतलब व्यक्तियों के स्वराज (स्व-शासन) से था और इसलिये उन्होंने स्पष्ट किया कि उनके लिये स्वराज का मतलब अपने देशवासियों हेतु स्वतंत्रता है और अपने संपूर्ण अर्थों में स्वराज स्वतंत्रता से कहीं अधिक है, यह स्व-शासन है, आत्म-संयम है और इसे मोक्ष के बराबर माना जा सकता है।

- **<u>ट्रस्टीशिप-</u>** ट्रस्टीशिप एक सामाजिक-आर्थिक दर्शन है जिसे गांधी जी द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
- यह अमीर लोगों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा वे गरीब और असहाय लोगों की मदद कर सकें।
- यह सिद्धांत गांधी जी के आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है, जो कि थियोसोफिकल लिटरेचर और भगवद्गीता के अध्ययन से उनमें विकसित हुआ था।
- **<u>स्वदेशी</u>:** स्वदेशी शब्द संस्कृत से लिया गया है और यह संस्कृत के 2 शब्दों का एक संयोजन है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और 'देश' का अर्थ है देश। इसलिये स्वदेश का अर्थ है अपना देश। स्वदेशी का अर्थ अपने देश से है, लेकिन ज्यादातर संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में लिया जा सकता है।
- स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह से अपने समुदाय के भीतर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह समुदाय और आत्मनिर्भरता की अन्योन्याश्रितता है।
- गांधी जी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि भारत का ब्रिटिश नियंत्रण उनके स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। स्वदेशी भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था।

व्यक्तिवाद

व्यक्तिवाद एक नैतिक (एथिकल), राजनैतिक एवं सामाजिक दर्शन (outlook) है जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता पर बल देता है और उसका समर्थन करता है। साधारण अर्थ में, स्वार्थ के समर्थन की, अथवा विशिष्ट समझे जानेवाले व्यक्तियों की महत्ता स्वीकार करने की प्रवृत्ति। दर्शन में, प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट व्यक्ति ठहराने की प्रवृत्ति।

व्यक्तिवाद का विचार समाज-विज्ञान के कई राजनीतिक सिद्धांतों और सामाजिक व्याख्याओं के मर्म में है। तत्त्व-चिंतन की दृष्टि से व्यक्तिवाद ब्रह्माण्ड को अलग-अलग की जा सकने वाली व्यक्तिगत इकाइयों से रचा हुआ मान कर चलता है। ईसाई तत्त्व-चिंतन में इसका संबंध प्रोटेस्टेंट आस्थाओं से जोड़ा जाता है जो पादरी या चर्च के हस्तक्षेप के बिना व्यक्ति और ईश्वर के बीच सीधे तादात्म्य की स्थिति देखती हैं। हालाँकि मनुष्य और भगवान के बीच निजी धरातल पर सीधे तादात्म्य का सिद्धांत हिंदू तत्त्व-चिंतन में भी प्रधान हैसियत रखता है, पर समाज-विज्ञान के हल्कों में इसकी शिनाख्त व्यक्तिवाद के स्रोत के तौर पर नहीं की जाती। मुख्यतः यह एक पश्चिमी विचार है और उदारतावाद जैसे महा-सिद्धांत के लिए इसका महत्त्व विधेयक माना जाता है। उदारतावादी चिंतक व्यक्ति के अविभाज्य अधिकारों के समर्थक हैं। सामाजिक समझौते का सिद्धांत राजनीतिक व्यक्तिवाद की पद्धति का इस्तेमाल करके ही रचा गया है।

- **उपयोगितावाद**

उपयोगितावाद (Utilitarianism) एक आचार सिद्धांत है जिसकी एकांतिक मान्यता है कि आचरण (action) एकमात्र तभी नैतिक है जब वह अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की अभिवृद्धि करता है। राजनीतिक तथा अन्य क्षेत्रों में इसका संबंध मुख्यत: बेंथम (1748-1832) तथा जान स्टुअर्ट मिल (1806-73) से रहा है। परंतु इसका इतिहास और प्राचीन है, ह्यूम जैसे दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित, जो उदारता को ही सबसे महान गुण मानते थे तथा व्यक्तिविशेष के व्यवहार से दूसरों के सुख में वृद्धि ही उदारता का मापदंड समझते थे।

उपयोगितावाद के संबंध में प्राय: कुछ अस्पष्ट ओछी धारणाएँ हैं। इसके आलोचकों का कहना है कि यह सिद्धांत, सुंदरता, शालीनता एवं विशिष्टता की उपेक्षा कर केवल उपयोगिता को महत्व देता है। पूर्वपक्ष का इसपर यह आरोप है कि यह केवल लौकिक स्वार्थ को महत्व देता है। किंतु ऐसी आलोचना सर्वथा समुचित नहीं कही जा सकती।